PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 6, ISSUE 3

सूखा बरगद में - मुस्लिम नारी की सामाजिक स्थिती

डॉ. सविता व्ही. रूक्के
हिन्दी विभाग प्रमुख
मातोश्री शांताबाई गोटे कला, वाणिज्य
एवं विज्ञान महाविद्यालय वाशिम
महाराष्ट्र भारत

स्वतंत्रता के बाद की भयावह परिस्थिती का वर्णन अनेक उपन्यासकारों ने अपने उपन्यास में किया है। विभाजन की त्रासदी, हिन्दु मुस्लीम दंगे की विभिषिका का ज्वलंत चित्रण भीष्म साहली का तमस, राही मासूम रजा का आधा गांव और खुशवंतसिंह का ट्रेन टु पाकिस्तान आदि में देश विभाजन की त्रासदी का जीवंत चित्रण किया गया है।

मंजूर एहतेशाम के सूखा बरगद में मुस्लिम मध्यवर्गीय समाज के सामाजिक ,आर्थिक और सांस्कृतिक संघर्ष को उजागर करता है। शिक्षित मुस्लिम नारी अधिक प्रगतिशील और क्रांतिकारी है। वह आत्मनिर्भर व अपने अस्तित्व के प्रति सचेत हो रही है और एक ऐसा समाज बनाना चाहती है जो धर्मनिरपेक्षता पर टिका हो। इस मानसिकता को गढ़ने वाले संस्कार और वैचारिक आधार को इस उपन्यास में देखा जा सकता है।

आधुनिक युग का महाकाव्य मान कर युगबोध और परिवेश के साथ जुडाव की दृष्टि से उपन्यास को सर्वाधिक महत्वपूर्ण विधा माना गया है तो कभी बलपूर्वक यह कहा गया है कि हर श्रेष्ठ उपन्यासकार अपने समय का इतिहास लिखता है। रचना को समय का साक्ष्य बनाने के लिए उपन्यासकार अपने कथा–सूत्र, चरित्र, भाषा और कथन पध्दतियों का चयन अपने खुद के अनुभव क्षेत्र से करता है। जलते कोयले की आग को जितना उंगुलियों से छू कर महसूस किया जा सकता है, उतना चिमटे से पकड कर नहीं। यही कारण है कि दलित वर्ग में जन्मे और बड़े हुए लेखकों की रचनाएँ उस वर्ग की नियती को अधिक मार्मिक ढंग से प्रस्तुत कर सकी है। यही बात मध्य वर्ग से संबंधित उपन्यासकारों पर भी लागू होती है। प्रेमचंद के जमाने से मुस्लिम समाज का यर्थाथ हिंदी उपन्यास के कथ्य का हिस्सा बनता रहा है, लेकिन यह निश्चित है कि मुस्लिम समाज के संर्घष, अंतर्विरोध, सदाशयता और भटकाव को जितने प्रामाणिक रूप में शानी,

अब्दुल बिस्मिल्लाह, राही मासूम रजा, नासिरा शर्मा, आगर वजाहत आदि की रचनाओं में उभारा गया ह।, उतनी विश्वसनीयता गैर मुस्लिम लेखकों के रचना –संसार में दुर्लभ है।

सूखा बरगद में मंजूर एहतेशाम ने शिक्षित मुस्लिम परिवार को क्रेंद में रखा है। उदार विचारों के अब्बू और परम्परा प्रिय अम्मी के वैचारिक संघर्ष और उससे उत्पन्न व्यावहारिक कठिनाइयों के बीच बच्चों– रशीदा और सुहैल की परवरिश होती है। एक ओर मॉ से प्राप्त संस्कार हैं, जो समाज में रूढियों के रूप में प्रचलित है, दूसरी और अब्बू के माध्यम से नये सोच, नये जमाने की हवा है जो बच्चों के मानसिक–बौध्दिक विकास को सही दिशा देती है। उसमें परिवार के दो तरह के मल्यों के बीच में झूलते रहने और फिर अपना एक रास्ता चुन लेने का साहस है और वह बदले हुए जमाने की अपने पैरों पर खडी, अपने कैरियर के प्रति जागरूक मुस्लिम युवती के रूप में आश्वस्त करती है। उपन्यासकार ने दिखाया है कि अनेक बाधाओं से जूझते हुए वह न केवल उच्चशिक्षा प्राप्त करती है, बल्कि आकाशवाणी में नौकरी करने की हिम्मत भी करती है। रशीदा के माध्यम से उपन्यासकार ने मध्यवर्ग की मानसिकता पर कहीं सीधे कहीं संकेतों में टिप्पणी का है। मध्यवर्ग की नारी के सोच और व्यवहार में आ रहे परिवर्तन को विस्तारपूर्वक रेखांकेत किया है। एक ओर रशीदा की मॉ, और उनके समकालिन की पीढ़ी है, जो अशिक्षा, पर्दाप्रथा आदि अनेक रूढ़ियों के बीच पली है, दूसरी और रशीदा और रजिया की पीढ़ी है जो उच्च शिक्षा प्राप्त कर चुकी है, जरूरी होने पर नौकरी भी करती है और जिसकी सोच कई मुद्दों पर रूढ़ि विरोधी है। उपन्यास में फफू जैसी औरतें हैं, जिन्होंने अपने पति के बिछोह को भुलाने के लिए खुद को 'नमाज और इबादत' मे डूबा दिया है। रशीदा की मॉ भी मजहबी स्ंस्कारों से जकड़ी हुई है। सुहैल और रशीदा की दीनी–तालीम मॉ के आग्रह पर ही शुरू होती है। लेकिन उपन्यासकार ने इन नारी चरित्रों को स्थूल, सपाट और निर्जीव बना कर नहीं देखा है। अपनी रूढियों और संकीर्णतों में बॅध कर भी रशीदा के व्यक्तित्व में इंसानियत की उष्मा आश्वस्त करती है।

अब्बू की प्रगतीशीलता के कारण भाई मियॉ और परिवार के लोग अब्बू का बहिष्कार कर देते हैं, लेकिन उनकी पत्नी अपने शौहर का साथ मुफलिसी और मतभेद के बावजूद नहीं छोड़ती। हर स्थिति में पति का साथ निभाने की इस मानसिकता को नारी की दासता का सूचक भी माना जा सकता है। लेकिन उपन्यासकार ने उसके और बीच के रिश्ते को इंसानियत के आधार पर टिका दिखाकर किसी तरह की भावुकता या रूढ़ि को प्रश्रय नहीं दिया है। अब्बू ने अपने और पत्नी के रिश्ते का विश्लेषण इस प्रकार किया है''.....न जाने कितनी बार मेरे साथ वह भूखी रही, मेरी वजह से आधे खानदान में कहीं भी आना–जाना छोड दिया। उन्हें तो अपने भाई के पास या जेठ के घर ही रूक जाना चाहिए था ताकि मैं सबक सीख कर उन्हें मना कर, दूसरों के बताये तरीकों से जिंदगी गुजारने लगता। क्या यह सारी तकलीफें उन्होंने यूँ ही, औरत होने के नाते बेवकूफी में सही! इस्लाम भी तो काफिर शौहर से निकाह करने को मना करता है। फिर क्या था, जिसने उन्हें मेरे साथ यूँ बॉधे रखा– उनकी नजर में मेरे तमाम कुफ्र और गुमराही

के बावजुद? यकीन जानो, अगर यह ताल्लूक मुसलमान से मुसलमान तक ही होता तो कभी खत्म हो चुका होता। तुम्हारी मॉ अगर यह सब दुख आक्र तकलीफ सहने के बाद भी आज इस घर में हैं, तो रिश्ता इंसान से इंसान का है। उन्हें यह यकीन है कि मैं बहुत बुरा इंसान हर्गिज नहीं हू। और मुझे अगर यकीन है तो सिर्फ इसी रिश्ते में यकीन है कि ऐ इंसान के लिए आप कैसे इंसान हैं।''

अब्बू द्वारा कही गई बात अनेक दृष्टियों से महत्वपर्ण है। तमाम अंतर्विरोधों के बावजुद एक मध्यवर्गीय मुस्लिम नारी 'इंसानियत' को अधिक महत्व देती है। यह तब और विश्वानीय लगता है कि जब हम पाते है कि उसी दौर की हब्बा बुआ, शप्पा आपा बड़ी आसानी से दूसरे पुरूषों के साथ रहने का फैसला कर लेती हैं। रशीदा की मॉ का अब्बू का हर तरह की तकनिफों और आर्थिक समस्याओं मे साथ देना, किसी पर का गुस्सा न दिखाना, इस बात का संकेत हे कि उनका संबंध केवल पति'पत्नी तक ही सीमित नहीं था। बल्कि एक इंसान का दूसरे इंसान के साथ के साथ जिस प्रकार संवेदनात्मक रिश्ता होता वह यहॉ कायत है। रशीदा और रजिया की पीढ़ी अपने मध्यवर्गीय संस्कारों, वर्जनाओं और कमजोरियों से पीछा छूड़ाने की कोशिश करती है। रशीदा को समाज का दोहरापन अखरता है। वास्तविकजा कुछ है और उसे दिखाया जाता किसी और रूप में है। विशेषताः पति–पत्नी के संबंध इसी त्राासदी से गुजर रहे है। 'पढ़ते है हम सीमोन द बूवा को और रहते हैं, एक ऐसे समाज में जहाफ की औरत अपने पति के लाख आग्रह के बाद भी पर्दा नहीं तोड़ पाती। और पति–पत्नी की बात पर सब ही तो एंसा दिखाना चाहते हैं जैसे आशिक और माशूक हों। यह जानते हुए भी कि उनकी सच्चाई लोगों से छिपी नहीं है।'

ऐसे भ्रम का रशीदा जैसी आधुनिक युवतियॉ ही दूर कर सकती है। विजय के साथ सहवास के बाद उसकी तात्कालिक प्रतिक्रियाएक औसत मध्यवर्गीय और रूढ़ संस्कारों से घिरी युवती जैसी ही है। वह एक पाप–बोध से भर गयी ह। :''एकदम ऐसा लगा जैसे मुझसे कोई बहुत बड़ी भूल हो गयी– ऐसी जिसका कोई प्रायश्चित कर पाना संभव नहीं है। सुहैल समझेगा, मैंने और विजय ने मिल कर उसकी पीठ में छुरा मार दिया। अब्बू ? क्या जब अब्बू ने फैसला करने का अधिकार मुझे सौंपा था तो कहीं दूर–दूर तक भी उनके दिमाग में ऐसे फैसले की रूपरेखा रही होगी ? मैंने उनके आसपास का परिवेश समाज व समाज द्वारा बनाए नीतिमूल्यों का यह स्वरूप था। एक अविवाहित युवती के लिए एक खास तरह से निर्धारित किए गए नीतिमूल्य व पवित्रता का आडंबर रचा गया है। अपने लिए अपनी तरह से सोचने या निर्णय लेने का भारतीय समाज में चाहें हिंदू या मुसलमान हो, नारी को अधिकार नहीं दिया है। ऐसी स्थिति में रशीदा का अपने जीवन में घटित इस घटना के बारे में अपराधबोध और पाप बोध अधि देर तक नहीं बना रहा। बाद में वह असे एक सहज–स्वाभाविक घटना के रूप में लेती है और ऐसा हीं सोचती कि इस घटना की परिणति केवल विजय के साथ विवाह के रूप में होनी चाहिए। जब विजय इस संबंध में गंभीरता दिखाता है तो वह इसे पुरूष का आदर्शवाद और उदारता का

प्रदर्शन जान कर तिलमिला उठती है। यह तिलमिलाहट सकारात्मक होने के साथ–साथ शिक्षित मुस्लिम युवती के बदलते सोच को भी दर्शाती है।

मुस्लिम नारी के सोच में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। मुस्लिम लड़कियों को आधुनिक शिक्षा का अधिकार दिया जाना एक क्रांतिकारी परिवर्तन है। रशीदा का रेडियो स्टेशन पर नौकरी करना मुस्लिम युवतियों के आत्मनिर्भर होने की दिशा में एक सफल प्रयास है।

रशीदा की त्रासदी दूसरे प्रकार की है, वह भीतर ही भीतर इस पीड़ा को सहती रहता है। वह जर्नलिस्ट होने का स्वप्न लेकर चलती है लेकिन आकाशवाणी में एनाउंसर हो जाती है। निम्नमध्य वर्ग की आर्थिक सीमाओं के दबाव को झेलकर भी वह अपने जीवन को यथार्थ की कठिन जमीन से टकराने देती है। सुहैल की तरह टुटकर बिखरती नहीं। अली हुसैन साहब द्वारा कहें कटू सत्य के अहसास से वह घबराती नहीं '' आज हम लोग कहॉ है? कम्युनिस्ट होते हुए भी पहले मुसलमान हैं या हिंदु'' यही कारण है कि विजय से प्रेम करके भी उसे दोनों के बीच एक अदृश्य दूरी का अहसास होता है। लेकिन वह शिक्षित है और अपने जीवन के बारे में निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र है। यही वह नई पीढ़ी है जो अंतर्विरोधों को केवल 'मुस्लमान' के संदर्भ में नहीं देखता। वैज्ञानिक सोच ने इस वर्ग में विश्वास पैदा किया है कि वे एक मिली जुली संस्कृति का निर्माण करने में सफल हो सकेंगे। इसके लिए इन्हें अपने स्वार्थो को बली चढाना होगा। उपन्यास से उभरी यह सोच प्रगतिशील आधुनिक भारत के निर्माण में सही साबित होगी।

संदर्भ सूची

1.धर्म, सांप्रदायिकता और राजनीतनि-राजकिशोर प्रवीण,नई दिल्ली

2.साहित्य का समाज शास्त्रीय चिंतन- सं. निर्मला जैन